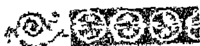
[illegible]

गान्धिकथाऽमृत



चंद्रमौलि सुकुल

उत्तमोत्तम कथा-ग्रंथ

वेणीसंहार-नाटक		॥=), १=)
चित्रशाला	(सचित्र)	२), २॥)
प्रेम-प्रसून		१=), १॥=)
प्रेम-गंगा	(सचित्र)	१), १॥)
प्रेम-द्वादशी	(,,)	१), १॥)
नंदन-निकुंज		१), १।)
मंजरी	(सचित्र)	१), १॥)
अश्रुपात	(,,)	१), १॥)
देवी पार्वती	(,,)	१), १॥)
देवी द्रौपदी	(,,)	॥)
देवी सती	(,,)	लगभग १)
नल-दमयंती	(,,)	॥), १)
व्रत-कथा		१॥)
सीता	(सचित्र)	२।), २॥)
सती विपुला	(,,)	२), २॥)
सती रुक्मिणी	(,,)	२), २॥)
महात्मा विदुर	(,,)	१॥), २)
लव-कुश	(,,)	१॥), २)
परशुराम	(,,)	३), ३॥)
प्रेमसागर		॥।=)
शुक्तोक्ति-सुधा-सागर		३॥)
वाल्मीकि रामायण	(भाषा)	१०)
महाभारत		४)

मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला का सत्तरवाँ पुष्प

नाट्यकथाऽमृत

[बिहार की १०-११वीं कक्षा के लिये स्वीकृत]

लेखक
चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०
(प्रिंसिपल ट्रेनिंग-कॉलेज, हिंदू-विश्वविद्यालय)

प्रकाशक
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
२९-३०, अमीनाबाद-पार्क
लखनऊ

सजिल्द १।।)] द्वितीयावृत्ति [सादी १।)



नाट्यकथाऽमृत

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
(सुधा-संपादक)



नाट्यकथाऽमृत

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
(सुधा-संपादक)

उत्तमोत्तम कथा-ग्रंथ

वेणीसंहार-नाटक	॥=), १=)	व्रत-कथा	१॥)
चित्रशाला (सचित्र)	२), २॥)	सीता (सचित्र)	१॥), २॥)
प्रेम-प्रसून	१=), १॥=)	सती विपुला (,,)	२), २॥)
प्रेम-गंगा (सचित्र)	१), १॥)	सती रुक्मिणी (,,)	२), २॥)
प्रेम द्वादशी (,,)	१), १॥)	महात्मा विदुर (,,)	१॥), २)
नंदन-निकुंज	१), १॥)	लव-कुश (,,)	१॥), २)
मंजरी (सचित्र)	१), १॥)	परशुराम (,,)	२), २॥)
अश्रुपात (,,)	१), १॥)	प्रेमसागर	॥=)
देवी पार्वती (,,)	१), १॥)	सूक्ति-सुधा-सागर	२॥)
देवी द्रौपदी (,,)	॥)	वाल्मीकि रामायण (भाषा)	१०)
देवी सती (,,)	लगभग १)	महाभारत	४)
नल-दमयंती (,,)	॥), १)		

मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला का अड़सठवाँ पुष्प

नाट्यकथाऽमृत

[बिहार की १०-११वीं कक्षा के लिये स्वीकृत]

लेखक

चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०

(प्रिंसिपल ट्रेनिंग-कॉलेज, हिंदू-विश्वविद्यालय)

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

सजिल्द १॥)]   द्वितीयावृत्ति   [सादी १)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीकेदारनाथ भार्गव
इलाहाबाद-ओरियंटल-प्रेस
लखनऊ

PREFACE.

'Natya-Kathamrita' or 'Nectar of Dramatic Tales in *Hindi*' contains 12 tales from the most renowned Sanskrit poets like Kalidasa and Bhavabhuti. It follows the lines of "Lambs' Tales from Shakespeare", with the disadvantage of inability to quote *verbatim* Sanskrit passages, prose or poetry, in Hindi. Attempts have, however, been made to substitute close Hindi versions wherever required—versions, some prepared by the writer, and a few thankfully borrowed.

Moderately literary language has been used, and while taking due care for fine sentiments and preserving the thread of the tales, obscene love-passages have as far as possible, been carefully pruned off.

ALLAHABAD:
May 14th, 19[illegible]4 } CHANDRA MAULI SUKUL

भूमिका

(द्वितीय संस्करण)

मुझे संतोष है कि प्रथम संस्करण का आदर पर्याप्त रूप से हुआ। संयुक्त-प्रांत, मध्य-प्रांत व बरार, पंजाब, तथा बिहार-उड़ीसा की सरकारी टेक्स्ट-बुक-कमेटियों ने अपने-अपने प्रांतों के स्कूलों के लिये उसे स्वीकार करने की कृपा की। कतिपय लब्धप्रतिष्ठ पत्रिकाओं तथा विद्वानों ने उसकी बहुत अच्छी समालोचना की। कुछ प्रतियाँ लंदन नगर तक भी पहुँचीं।

अब पुस्तक का द्वितीय संस्करण लखनऊ की "गंगा-पुस्तकमाला" कर रही है। सुंदर छपाई और चित्रों से विभूषित होकर यह संस्करण पहले से कहीं अधिक चित्ता-कर्षक होगा। विषय में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। शुभम्।

काशी,
माघ, सं० १९८३ वि०

चंद्रमौलि सुकुल



भूमिका

(प्रथम संस्करण)

इस ग्रंथ में संस्कृत के उत्तमोत्तम बारह नाटकों की कथाओं का सार दिया गया है। उनमें शकुंतला, विक्रमोर्वशीय और मालविकाग्निमित्र जगद्विख्यात कवि कालिदास के, महावीरचरित, उत्तररामचरित और मालतीमाधव महाकवि भवभूति के तथा रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद महाराज श्रीहर्षदेव के हैं। मृच्छकटिक राजा शूद्रक का, वेणीसंहार नारायण कवि का और मुद्राराक्षस विशाखदत्त का है।

पहलेपहल मेरा विचार था कि अन्य लेखकों की भाँति पूरे-पूरे ग्रंथों का गद्य-पद्य-मय अनुवाद करूँ; किंतु इसमें बहुत समय तथा परिश्रम की आवश्यकता थी, और फिर भी एक-एक ग्रंथ पृथक्-पृथक् रहता, जिससे पाठकों को कोई सुबीता नहीं था। अतः मैंने उन अमृतमय नाटकों का सार खींचकर कथा-रूप में रक्खा है। इन कथाओं के पढ़ने से थोड़े ही श्रम और समय में नाटकों की सब बातें ज्ञात हो जायँगी और इस बात का परिचय मिल जायगा कि हमारे देश के पुराने कवि कैसे प्रतिभाशाली थे।

कथाओं में जो पद्य आए हैं, वे सब मेरे ही बनाए नहीं हैं—भवभूति के तीनों नाटकों की कथाओं में तथा एकआध और स्थल पर कईएक पद्य लाला सीतारामजी (भूप) के अनुवादित ग्रंथों से, उनकी आज्ञा लेकर, उद्धृत किए हैं, और मुद्राराक्षस की कथा में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी की पुस्तक से कई एक पद्य तथा उपोद्घात से किंचित् गद्य भी लिया है। दो पद्य और आचार्यों के भी हैं। इस सहायता की स्वीकृति सधन्यवाद करता हूँ।

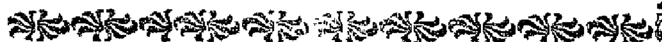
नाटकों में प्रायः नायक और नायिका का प्रेम-वृत्तांत होता है। कथाओं में यह कम करके केवल उतना ही रक्खा गया है, जिससे क्रम में हानि न हो, और रोचकता न नष्ट हो। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार और बातों में भी कमी-बेशी कर दी गई है ; परंतु ऐसी बात कोई नहीं छोड़ दी गई, जिससे कथा के फैलाव में हानि हो। भाषा प्रायः सर्वत्र ऐसी है, जो साधारणतः अच्छी तरह हिंदी जाननेवालों की समझ में आ जाय।

यदि हमारे प्रिय और विद्वान् पाठकगण अपनी उदारता से इस ग्रंथ को आदर देकर तथा भूल-चूक क्षमा करके मेरी हिम्मत बढ़ावेंगे, तो कुछ समय में इसका दूसरा भाग भी प्रकाशित करके सेवा में उपस्थित करूँगा।

चंद्रमौलि सुकुल

कथा-सूची

			पृष्ठ
१.	शकुंतला (कालिदास)	...	१
२.	विक्रमोर्वशीय (कालिदास)	...	२४
३.	मालविकाग्नि-मित्र (कालिदास)	...	४२
४.	महावीर-चरित (भवभूति)	...	५६
५.	उत्तर-रामचरित (भवभूति)	...	८०
६.	मालती-माधव (भवभूति)	...	१०२
७.	रत्नावली (श्रीहर्षदेव)	...	१२४
८.	प्रियदर्शिका (श्रीहर्षदेव)	...	१३८
९.	नागानंद (श्रीहर्षदेव)	...	१५३
१०.	मृच्छकटिक (राजा शूद्रक)	...	१७०
११.	वेणी-संहार (नारायण)	...	१९२
१२.	मुद्राराक्षस (विशाखदत्त)	...	२०९





सकल गुरुन सेवा करहु, सौतिन सों करु प्रीति ;
पति जद्यपि रोषहु करहिं, धरहु न अनुचित रीति ।
परिजन पर ममता करहु, भाग्य पाय नहिं मान ;
गृहिनी लच्छन सुभ यही, अन्य मिटै कुलकान ।

(पृष्ठ ११)

Ganga Fine Art Press, Lucknow.